# राजस्थान सामान्य ज्ञान

# लोक-देवियाँ

## कला व संस्कृति

## हस्तलिखित नोट्स

BY AADARSH KUMAWAT

Rajasthan GK

5000 प्रश्न

टेस्ट देकर पढ़ें और तैयारी को नई दिशा दें

टॉप 1000 प्रश्न

ई - बुक सामान्य ज्ञान

डाउनलोड करलो

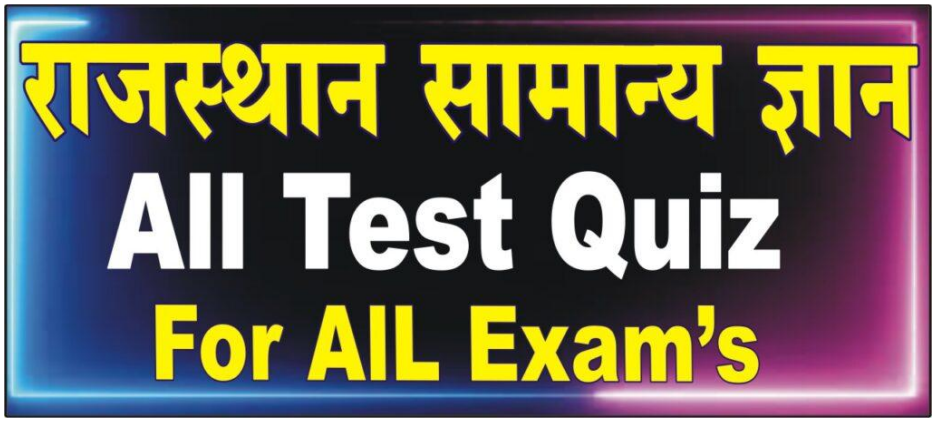

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

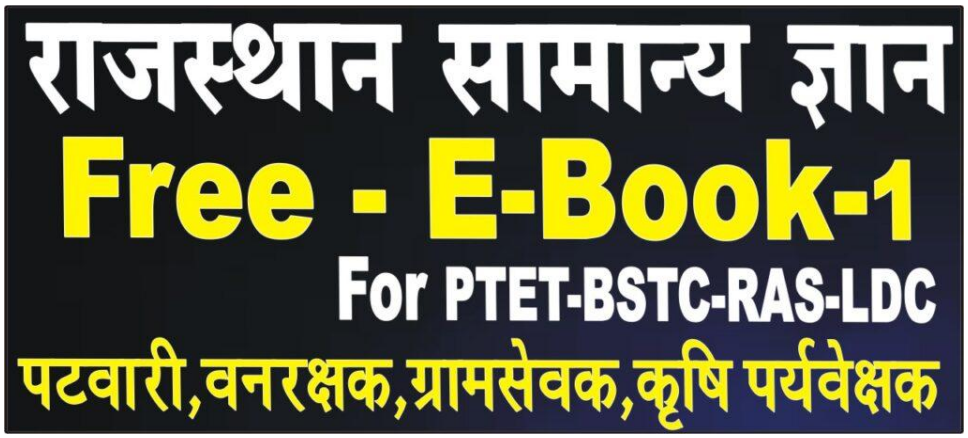

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई–बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें

सामान्य विज्ञान
500 - Questions
PDF डाउनलोड

Neel Kamal
Date
Page

# राजस्थान की लोकदेवियाँ

» राजस्थान के जनमानस मे शक्ति की प्रतीक के रूप में लोक देवियों के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास और आस्था है।

## ⇒ करणी माता ⇐ देशनोक, बीकानेर

» बीकानेर के राठौड़ो की कुल देवी
» चूहो वाली देवी के नाम से विख्यात
» इनका जन्म सुआप गांव, चारण जाति मे
» पिता- श्री मेहाजी
» मुख्य मन्दिर- देशनोक (बीकानेर)
» मन्दिर में बड़ी संख्या में चूहे "करणी जी के काबे" कहे
» सफेद चूहे करणी जी के दर्शन माने जाते है।
» करणी जी का मन्दिर मठ कहलाता है।
» मान्यता है कि करणी जी ने देशनोक कस्बा बसाया।
» करणी जी की इष्ट देवी तेमड़ा माता
» करणी जी के मन्दिर के पास तेमड़ेराय माता मन्दिर।
» करणी जी का एक रूप सफेद चील भी है।
» मन्दिर से दूर नेहड़ी नामक दर्शनीय स्थल है। यहाँ स्थित शमी (खेजड़ी) के एक वृक्ष पर माता डोरी बांधकर दही बिलोया करती थी।
» इस वृक्ष की छाल उतारकर भक्तजन ले जाते है।
» करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते है।
» करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक राव बीका ने बीकानेर में राठौड़ वंश की स्थापना
» करणी माता के ग्वाले दशरथ मेघवाल का देवरा है।
» सावण भादो नामक दो बड़े कढ़ाह रखे हुए है।
» मन्दिर का शुभ कार्य सेठ चान्दमल ढढ्ढा ने करवाया
» प्रतिवर्ष दो बार मेले - चैत्र व आश्विन नवरात्रों में
» 150 वर्ष भौतिक शरीर रखने के उपरान्त वि.सं. 1595 की चैत्र शुक्ला नवमी को धिनेरु की तलाई के पास महाप्रयाण।

॥ जीण माता ॥ सीकर

⇒ चौहान वंश की आराध्य देवी।

पिता - धन्धराय , भाई - हर्ष

⇒ मन्दिर - पृथ्वीराज चौहान प्रथम के शासनकाल मे राजा हट्टड द्वारा करवाया गया था। जिसमे जीणमाता की अष्टभुजी प्रतिमा है।

⇒ जीणमाता का मन्दिर - रैवासा ग्राम की आडावाला पहाड़ियो के मध्य स्थित।

⇒ हर्ष का मन्दिर भी पास में हर्ष की पहाड़ियो में।

⇒ पहाड़ के समतल स्थान पर जोगी तालाब स्थित।

⇒ जीणमाता ने आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर घोर तपस्या की

⇒ चैत्र व आश्विन माह की शुक्ला नवमी को मेला

⇒ घी व तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित।

⇒ जीण माता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा गीत है।

कनफटे जोगियों द्वारा डमरु एवं सारंगी की संगत में

⇒ जीण माता पुराण वर्णित जयन्ती देवी है।

⇒ इनका अन्य नाम भ्रामरी देवी भी है।

⇒ जीण माता विशेष अवसर पर ढाई प्याला मदिरा सेवन।

⇒ मन्दिर में बकरों के कान की बलि।

⇒ मधुमक्खियों की देवी के नाम से जाना जाता।

⇒ शेखावाटी क्षेत्र की लोकदेवी।

⇒ मीणो की लोकदेवी भी माना जाता है।

⇒ दूसरा मन्दिर - नागौर के प्राचीन कस्बे मारोठ के पश्चिम में स्थित पर्वत की गुफा के भीतर जीणमाता का एक छोटा भव्य मन्दिर है।

⇒ हर्ष पर्वत पर चतुर्दशी के दिन हर्ष भैरु का मेला लगता है।

## ⇓ कैलादेवी ⇓ (करौली)

- करौली के यादवों की कुलदेवी
- मन्दिर- त्रिकूट पर्वत की घाटी करौली में
- इनकी आराधना में प्रसिद्ध लागुरिया गीत गाते हैं
- मीणा व गुर्जर लोग लागुरिया नृत्य करते हैं।
- चैत्र नवरात्रा में चैत्र शुक्ला अष्टमी को इनका विशाल लक्खी मेला भरता है।
- देवी मन्दिर के सामने बोहरा भक्त की छतरी।
- मन्दिर की प्रमुख विशेषता- कनक दण्डवत है।
- मन्दिर का निर्माण 1900 में गोपालसिंह द्वारा करवाया
- मूर्ति प्रतिष्ठित केदार गिरी योगी ने कराई।
- कैलादेवी को अंजना माता या कैला मैया भी कहा जाता
- लोक मान्यता है कि कंस ने अपनी बहन देवकी की जिस नवजात कन्या को शिला पर पटककर मारना चाहा था वही कन्या देवयोग से करौली के त्रिकूट पर्वत पर कैलादेवी के रूप में अवतरित
- दुर्गा का एकमात्र मन्दिर जहां कोई बलि नहीं चढ़ती।

## ⇓ शिलादेवी (अन्नपूर्णा) आमेर ⇓

जयपुर कछवाहा राजवंश की आराध्य देवी

- अष्टभुजी काले पत्थर की मूर्ति को 16वी सदी के अंत में आमेर महाराजा मानसिंह प्रथम पूर्वी बंगाल के राजा केदार से युद्ध कर परास्त करके लाए।
- मानसिंह प्रथम ने मूर्ति राजमहल के पास स्थापित की
- मन्दिर निर्माण मिर्जाराजा जयसिंह ने करवाया।
- शिलादेवी महिषासुर मर्दिनी के रूप में प्रतिष्ठित है।
- अष्टभुजा मूर्ति एक पाषाण शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण है।
- वर्ष में दो बार मेले (चैत्र व आश्विन नवरात्रा)
- कलात्मक संगमरमर का कार्य महाराजा सवाई मानसिंह (द्वितीय ने) 1906 में करवाया था।

→ शीतला माता (चाकसू - जयपुर)

चेचक की देवी के रूप में प्रसिद्ध

→ अन्य नाम सैढल माता या महामाई।

→ मन्दिर - चाकसू की शील डूंगरी पर स्थित

→ निर्माण - जयपुर महाराजा माधोसिंह ने करवाया

→ चैत्र कृष्णा अष्टमी (शीतलाष्टमी) मेला भरता

→ इस दिन रात का बनाया ठण्डा भोजन खाते है जिसे बास्योड़ा कहा जाता है।

→ शीतला माता की सवारी गधा है।

→ बच्चो की संरक्षिका देवी।

→ जांटी (खेजड़ी) को शीतला माता मानकर पूजी जाती

→ शीतला माता की मूर्ति (खंडित प्रतिमा) है।

→ इनके पुजारी कुम्हार जाति के लोग होते है।

→ उत्तरी भारत में (मातामाई) तथा पश्चिमी भारत में माई अनामा कहा जाता।

→ इनका एक मन्दिर कागा क्षेत्र (जोधपुर) में है।

→ प्रारम्भ में इनका मन्दिर मेहरानगढ़ दुर्ग में था।

## जमुवाय माता (जमुवारामगढ़, जयपुर)

→ ढूंढाड़ के कच्छवाहा राजवंश की कुल देवी

→ मन्दिर जमुवारामगढ़ (जयपुर) में स्थित।

→ जमुवायमाता का प्राचीन नाम जामवन्ती था।

→ जमुवाय माता के नाम पर कस्बे का नाम जमुवारामगढ़

→ मन्दिर के सामने विशाल वटवृक्ष के नीचे भोमियाजी।

→ मूर्ति गाय व बछड़े के साथ प्रतिष्ठित।

→ मन्दिर का निर्माण दूल्हेराय ने करवाया। (तेजकरण)

अन्य प्रसिद्ध मन्दिर = ② भौड़की - झुन्झुनु

③ मदौली एवं भादनी मंड - सीकर

④ भुणास - (नागौर)

॥ शाकम्भरी देवी ॥

» सांभर जयपुर में देवी का मन्दिर स्थित है।
» शाकम्भरी माता चौहानों की कुलदेवी है।
» चौहानों का आरम्भिक शासन काल सांभर के आसपास के क्षेत्र सपादलक्ष में था।
याद रहे- सांभर को ही देवयानी या सब तीर्थों की नानी कहा जाता है।
» मेला- भादवा सुदी अष्टमी को।
» राज्य में इनके दूसरा मन्दिर - मलयकेतु पर्वत (उदयपुरवाटी, झुंझुनु)

॥ आई माता (बिलाड़ा जोधपुर)

» आईजी रामदेव जी की शिष्या थी।
» सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुल देवी
» भक्त इनके मन्दिर को दरगाह भी कहते है।
» इनका थान बडेर कहलाता है।
» आई माता का थान में अखण्ड ज्योति प्रज्वलित रहती। जिससे हमेशा केसर टपकती रहती है।
» आई माता का जन्म मालवा में हुआ था बाद में इनके परिवार जन (मालवा) मांडू के सुल्तान के डर से मारवाड़ आ गए।
» इन्होंने एक पंथ चलाया जिसका नाम - आई पंथी

» आई माता की गाड़ी को बैल कहा जाता है।
» इनका बचपन नाम जीजी बाई था।
» अपने पंथ का प्रथम दीवान गोविन्दसिंह रागेड़ को आई पंथी पाट पर नियुक्त किया।
» इस देवी के मन्दिर में गुर्जरो का प्रवेश निषेध माना जाता है।

## ॥ नागणेची माता ॥

- जोधपुर के राठौड़ो की कुलदेवी।
- नागणेची की अठारह भुजाओं वाली प्रतिमा जोधपुर में राव बीका ने स्थापित की।
- नागणेची माता महिषामर्दिनी का स्वरूप है।
- नागणेची माता का दूसरा स्वरूप श्येन पक्षी बाज, चील है।
- कल्लाजी राठौड़ की कुलदेवी नागणेची माता थी।
- राव मालदेव के समय देवी की प्रतिमा मूलवश उदयपुर राजघराने में स्थानांतरित हो गई। विवाह के दहेज में जाने के कारण उदयपुर में भी नागणेची माता का पूजन किया जाता है।

## ॥ सुगाली माता ॥

- आउवा के ठाकुर परिवार (चाँपावतो) की कुलदेवी। (वर्तमान में पाली में)
- इस देवी प्रतिमा के दस सिर और चौपन हाथ है।
- 1857 की क्रान्ति की देवी।
- सुगाली माता की मूर्ति ऊंचाई 3 फुट 8 इंच चौड़ाई 2 फुट 5 इंच है।
- वांगड़ म्यूजियम पाली में मूर्ति रखी गई।

## ॥ सच्चियाय माता ॥ सच्चिका माता ॥

- ओसियां (जोधपुर) में इनका प्रसिद्ध मन्दिर है।
- निर्माण - परमार रामकुमार उपलदेव द्वारा करवाया।
- सच्चियाय माता ओसवालों की कुलदेवी है।
- ओसिया का प्राचीन नाम उपकेश, उकेश था।
- प्रतिमा महिषासुर मर्दिनि स्वरूप है।

। चामुण्डा माता । जोधपुर
→ दुर्गा माता का सातवां अवतार
→ प्रतिहार शासकों की कुलदेवी
→ चामुण्डा माता का मूल मन्दिर जोधपुर से 30 कि.मी. चामुण्डा गांव की पहाड़ी पर स्थित।
→ माना जाता है कि माता कि मूर्ति स्वतः ही उत्पन्न।
→ राव चूंडा की इष्ट देवी।आराध्य देवी।
→ राव चूंडा ने मंडोर में मन्दिर बनाया
→ राव जोधा ने 1460 में दुर्ग में स्थापित करवाई।
→ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल तेरस को चामुण्डा माता के मन्दिर का जीर्णोद्धार दिवस मनाया जाता है।
→ सितम्बर 2008 में नवरात्रा अवसर पर भगदड़
→ 300 लोगो की असामयिक मौत
→ जांच आयोग- जसराज चौपड़ा की अध्यक्षता में

॥ खटियाल माता ॥ फलौदी = जोधपुर
= मन्दिर के पास खेजड़ी वृक्ष होने के कारण इन्हे खेजड़ीबेरी राय भवानी भी कहा जाता है।
→ कल्लों की कुलदेवी मानी जाती है।

॥ राणी सती ॥ झुन्झुनु
→ अग्रवाल जाति की राणी सती का वास्तविक नाम = नारायणी ॥ मृत्यु के बाद नारायणी = सती
→ मेला- भाद्रपद अमावस्या को।
→ इन्हें दादी जी भी कहा जाता है।
→ अब राज्य में सती की पूजा एवं महिमा मंडन पर रोक लगा दी ताकि किसी स्त्री को जबरन सती होने से रोका जा सके।
→ इनकी जाति में कुल 13 महिलाएं सती हो चुकी है।

टेलीग्राम **website** व **youtube** ज्वाइन करने के लए आइकॉन पर क्लिक करें

# आवड़ माता (जैसलमेर)

- भाटी राजवंश की कुलदेवी
- जैसलमेर के तेमड़ी भाखर पर इनका मन्दिर
- सुगनचिड़ी को आवड़ माता का स्वरूप मानते है।
- आवड़ माता को हिंगलाज माता का अवतार मानते है।
- आवड़ माता को तेमड़ाई भी कहा जाता है।
- मांड प्रदेश में इनकी आस्था से सात मन्दिरों का निर्माण करवाया गया।

① काला डुंगराय माता- मन्दिर का निर्माण 1998 महारावल जवाहरसिंह ने करवाया

② आईनाथ जी/खांगिया माता- जैसलमेर के भाटी राजवंशो की कुलदेवी

③ तन्नोटराय का मन्दिर- सेना के जवानों की देवी धार की वैष्णोदेवी, रुमाल वाली देवी।

भारत और पाकिस्तान युद्ध के समय तन्नोट माता ने अपनी शक्ति से हमारी रक्षा की। 16 नवम्बर 1965 को पाकिस्तान की ओर से बम बरसाने पर भी तन्नोट के चारो ओर सुरक्षा रही

- भारतीय जीत का प्रतीक (विजयस्तम्भ) जो तन्नोट माता मन्दिर के सामने बना हुआ है।

④ घंटियाली राय का मन्दिर-

⑤ लेमडेराय का मन्दिर चारण जाति के लोग इस स्थान को द्वितीय हिंगलाज भी कहते है।

⑥ देगराय का मन्दिर- देवीकोट-फलसूण्ड मार्ग पर स्थित

⑦ भादरियाराय माता मन्दिर-

- 1888 में आश्विन शुक्ला पूर्णिमा को मंदिर प्रतिष्ठा
- हरवंशसिंह निर्मल साधु ने यहां तपस्या की एक सुमित्त सबसे बड़ा पुस्तकालय भी निर्मित है।
- सरस्वती का एक अनूठा संगम है।

## अम्बिका माता- जगत :(उदयपुर)

- जगत अम्बिका मन्दिर मेवाड़ का खजुराहो कहलाता है।
- राजा अल्लट के काल में महामारू शैली में निर्मित
- यहां नृत्य गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।
- यह मन्दिर शक्तिपीठ कहलाता है।

## पथवारी माता -

- पथवारी देवी गाँव के बाहर स्थापित की जाती है।
- इनके चित्रों में नीचे काला-गौरा भैरु तथा ऊपर कावड़िया वीर व गंगाजी का कलश बनाया जाता है
- तीर्थयात्रा की सफलता की कामना हेतु पूजी जाती है।

## नकटी माता -

- जयपुर के निकट जय भवानीपुरा में नकटी माता का प्रतिहार कालीन मन्दिर है।

## ब्राह्मणी माता -

- सोरसन ग्राम अन्ता (बारां) में विशाल प्राचीन मन्दिर
- जहां देवी की पीठ का श्रृंगार होता है।
- और पीठ की ही पूजा अर्चना की जाती है।
- यह अकेला मन्दिर जहां देवी के पीठ की पूजा होती है अग्र भाग की नहीं।
- यहां माघ शुक्ला सप्तमी को गधो का मेला भरता है।

## जिलाणी माता -

बहरोड़ कस्बा अलवर में इनका प्रसिद्ध मन्दिर
प्रतिवर्ष 2 बार मेला।
जिलाणी गुजरी ने मुस्लिम शासकों द्वारा जबरन पकड़े गए हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाने प्रयत्नों को अपनी बहादुरी व पराक्रम के बल पर निष्फल कर दिया।

## कैवाय माता - किणसरिया गांव (नागौर)

1000 ऊंची पर्वत चोटी पर कैवाय माता का मन्दिर
→ साम्भर के चौहान शासक दुर्लभराज के सामंत चच्चदेव (दहिया वंश) ने वि.स. 1056 अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी 3) को करवाया।
→ मन्दिर के सभामंडप में दो शिलालेख उत्कीर्ण है।
→ काला भैरव की दो मूर्तियां विराजमान।

## ॥ आशापुरी माता ॥ जालौर ॥

→ मोदरा गांव या महोदरी माता के नाम से भी जाना जाता
→ इनका मन्दिर जालौर के मोदरां स्थान पर स्थित है।
→ जालौर के सोनगरा चौहानो की कुलदेवी।
→ यह मूर्ति लगभग 1000 वर्ष पुरानी है।
→ भगवती दुर्गा का नाम भी महोदरी उल्लेखित है।

## । सुन्धा माता (सुंडा) जालौर।

→ दांतलावास ग्राम की सुंडा पर्वत पर प्रसिद्ध मन्दिर
→ जालौर चौहान शासको का एक शिलालेख उत्कीर्ण
→ चामुण्डा देवी (सुन्धा माता) को सूंधा माता भी।
→ मन्दिर के मार्ग में एक जलकुण्ड "काडिया .. दरा" एवं महात्मा रावड़ नाथ का धूणा, पाटलियो की पांब यहां 40 फीट ऊंचाई से झरना गिरता है।
नागिनी तीर्थ, भूरेश्वर महादेव का लिंग।
→ सुंधा माता के केवल सिर की पूजा की जाती है।
→ अघटेश्वरी माता भी कहते है।
→ मेला - वैशाख एवं भाद्रपद में शुक्ला त्रयोदशी से पूर्णिमा तक मेले भरते है।

→ त्रिपुर सुन्दरी (तलवाड़ा ग्राम बांसवाड़ा)
→ उमराई गांव में मां त्रिपुरी का प्रसिद्ध मन्दिर
→ मां त्रिपुर सुन्दरी गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह की इष्ट देवी थी।
→ देवी के पीठ की स्थापना तीसरी सदी पहले की है।
→ चान्दाभाई (पाता लुहार) ने मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया
→ मेवाड़ के गुहिलों की भी परम श्रद्धा थी।
→ मन्दिर गर्भगृह में अठारह भुजाओं वाली (काली)
→ काले पत्थर की आकर्षक प्रतिमा विराजमान है।
→ मूर्ति के निचले भाग में श्रीयंत्र उत्कीर्ण है।
→ नवरात्रों में यहां विशाल मेला भरता है।

→ दधिमति माता ← गोठ-मांगलोद-नागौर
→ जनश्रुति के अनुसार स्वतः उत्पन्न प्रतिमा का कपाल ही निकल पाया जिससे इन्हे कपालपीठ कहा जाता
→ माता की प्रतिमा के ठीक सामने संवत् 289 का शिलालेख लगा हुआ है।
→ यह माता दाहिमा/दायमा/दाधिच ब्राह्मणो की कुलदेवी
→ चैत्र आश्विन नवरात्रों में विशाल मेला भरता है

→ वीरातरा (विरात्रा) माता = चौहटन बाड़मेर
लाख एवं मुद्गल वृक्षो के बीच रमणीक पहाड़ी क्षेत्र पर
→ माता विरात्रा भोपो की कुलदेवी है
→ नारियल की जोत एवं बकरो की बलि चढ़ाई जाती।

→ अर्बुदा माता ← माउंटआबू (सिरोही)
→ 4200 फीट ऊंची पहाड़ी अर्बुदांचल की अधिष्ठात्री देवी
→ देवी की मूर्ति दूर से देखने पर भूमि का स्पर्श करते हुए नहीं देख सकते इसीलिए अधरदेवी भी कहते है
→ चैत्र पूर्णिमा व आश्विन पूर्णिमा को मेला भरता है।

= छींक माता = जयपुर
गोपालजी के रास्ते जयपुर में इनका मन्दिर।
माघ सुदी सप्तमी को छींक माता की पूजा

भद्रकाली (हनुमानगढ़)
प्रतिवर्ष चैत्र एवं आश्विन माह के शुक्ल पक्ष में नवरात्रा के अवसर पर भव्य मेला।

॥ सीता माता अभयारण्य ॥
प्रतापगढ़ के सीतबाड़ी गांव से 2 कि.मी. की दूरी पर सीता माता अभयारण्य में स्थित प्राचीन मन्दिर।
→ सीता माता मन्दिर में ज्येष्ठ अमावस्या को मेला।
→ मान्यता है कि माता सीता ने अन्तिम दिन यही बितायें लव कुश दोनो को यही जन्म दिया
= दो जलकुण्ड (लव व कुश) एक में गर्म तो दूसरे में ठण्डा पानी (सौत)
→ यहां निकट वाल्मीकि गुफा और आश्रम भी है।

→ विंध्यवासिनी - एकलिंगजी के पास उदयपुर में प्राचीन मन्दिर
→ देवी की प्रतिष्ठा का श्रेय हारीत ऋषि को जाता है।

→ दांतमाता माता व कोटा शहर से 20 कि.मी दूर मन्दिर यह देवी कोटा राजपरिवार की कुलदेवी।

→ चौंथमाता = चौंथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर) मन्दिर के पीछे गोरे व काले भैरू के मन्दिर

→ गायत्री माता - पुष्कर में, यह देवी शापविमोचनी देवी के रूप में मानी जाती है।

→ सावित्री माता - पुष्कर के दक्षिण भाग में रत्नागिरी पहाड़ी पर (प्रजापिता ब्रह्मा की पत्नि) का पौराणिक मन्दिर (भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को मेला)

→ घेवर माता - राजसंमद (राजसंमद की पाल का पहला पत्थर घेवरबाई के हाथो से रखा गया)
→ क्षेमकारी माता - भीनमाल (जालौर)
→ भदाणा माता (भदाणा - कोटा)
→ आवरी माता (निकुम्भ, चित्तौड़गढ़)
→ उंहाला माता (वल्लभनगर (उदयपुर)
→ खोडियार देवी - खोडाल लोंगीवाला (जैसलमेर)
→ बड़ली माता - आकोला (चित्तौड़गढ़) बेड़च के किनारे
→ नारायणी माता - सरिस्का वन में बरवाडूंगरी पर राजगढ़ (अलवर) नाई जाति की कुलदेवी।
→ बाण माता - उदयपुर। सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी
→ अबुर्देश्वरी माता - परमार शासको की कुलदेवी
→ छिंछ माता - बासंवाड़ा
→ सीमत माता - बसंत गढ़ (सिरोही)
— भुवाल माता भुवाल ग्राम (नागौर)
— पीपाड़ माता - ओसियां जोधपुर
— हिंगलाज माता - नाइलाई (जोधपुर) लोद्रवा (जैसलमेर)
→ राठासण देवी - इनका मंदिर एकलिंग के पीछे। इनका दूसरा नाम राष्ट्रश्येना भी है।
→ जोगणिया माता - भीलवाड़ा।

→ वे मेले जो वर्ष में दो बार भरते है -
① करणी माता ② दधिमति माता ③ सुन्धा माता
④ त्रिपुर सुन्दरी ⑤ अर्बुदा माता ⑥ जिलाणी माता
⑦ चामुण्डा माता ⑧ जीण माता ⑨ शिलादेवी

## राजस्थान के प्रमुख राजवंशो की कुलदेवीयां

- → करणी माता (बीकानेर - बीकानेर राठोड़ो की कुलदेवी
- → ज्वाला माता - जोबनेर - खंगारोतो की कुलदेवी
- → कैलामाता, करौली - यादव राजवंश की कुलदेवी
- → शाकंभरी माता, सांभर - शाकंभरी चौहानो की कुलदेवी
- → ~~जमुवाय माता (जयपुर) कच्छवाहो राजवंश की कुलदेवी~~
- → स्वांगिया माता (जैसलमेर) भाटी राजवंश की कुलदेवी
- → राजेश्वरी देवी (भरतपुर) भरतपुर जाट वंश की कुलदेवी
- → नागणेची माता (जोधपुर) जोधपुर के सम्पूर्ण राठौड़ो की कुल
- → आशापुरी माता (जालोर) जालोर सोनगरा चौहानो की कुल
- → बाणमाता - (उदयपुर) सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी
- → चामुण्डा माता - (मंडोर) गुर्जर प्रतिहार राजवंश की कुलदेवी
  - → मंडोर, जोधपुर राठौड़ो की आराध्य देवी।
- → जीण माता - (सीकर) चौहानो की आराध्य देवी
- → शिला माता जयपुर → कच्छवाहा राजवंश की आराध्य देवी
- → जमुवाय माता (जमवारामगढ़) ढूंढाड़ के कच्छवाह राजवंश की कुलदेवी

## ॥ प्रमुख जातियों की कुल देवियां ॥

- → नारायणी माता - (अलवर) सैन (नाई) समाज की
- → दधिमति माता (नागौर) दाधिच ब्राह्मणो की कुलदेवी
- → करणी माता (देशनोक) चारणो की कुलदेवी
- → सुगाली माता - (पाली) आउवा के ठाकुरों की कुलदेवी
- – सिकराय माता (झुन्झुनु) झुन्झुनु खण्डेलवालो की
- → सच्चियाय माता (जोधपुर) ओसवालो की कुलदेवी
- – चौथ माता (चौथ का बरवाड़) कंजर समाज की कुलदेवी
- – शीतला माता (चाकसू) बच्चों की माता
- – आई माता (बिलाड़ा) सिरवी जाति की कुलदेवी
- – राणी सती - (झुन्झुनु) अग्रवाल जाति की देवी
- – लटियाल माता (फलौदी) कल्लों की कुलदेवी
- – तनोट माता (जैसलमेर) सैनिको की देवी।

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

GK/GS टॉप 1000 प्रश्न –
Download Now

राजस्थान GK हस्त ल खत नोट्स
DOWNLOAD NOW

भारत सामान्य ज्ञान टेस्ट-शुरू करे

RAJASTHAN GK E-BOOK - DOWNLOAD

RAJASTHAN GK TEST–START NOW